1

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

द्वितीय सेमेस्टर

दिनांक - 20-06-2024

14 JUL

प्रश्न. सूरदास के वियोग वर्णन की क्या विशेषता है?

प्रश्नोत्तर - महाकवि सूरदास को वात्सल्य और श्रृंगार का सम्राट माना जाता है, आचार्य शुक्ल ने उनके बारे में लिखा है कि वे वात्सल्य और श्रृंगार का कोना-कोना झाँक आये हैं। इन बातों के बावजूद वात्सल्य की तुलना में सूर के श्रृंगार वर्णन के पदों में रागात्मकता का उन्मेष व्यापकता से हुआ है, कहा जा सकता है कि सूरदास ने श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों ही पक्षों का व्यापक वर्णन किया है परन्तु वियोग वर्णन में अधिक रमे हैं, हम कह सकते हैं कि वे वियोग वर्णन के सिद्धहस्त कवि हैं।

वियोग के शास्त्रानुसार चार अंग माने जाते हैं, प्रथम - पूर्वराग, द्वितीय - मान, तृतीय - प्रवास और चतुर्थ करुण को माना गया है, वियोग को भी दो रूपों में विभक्त माना जाता है। प्रथम - वात्सल्य का वियोग और द्वितीय दाम्पत्य का वियोग पक्ष है, वात्सल्य में [illegible] और नन्द की आंतरिक पीड़ा [illegible]

२

[illegible] मिलने को नहीं उनके पक्ष [illegible]
पक्ष के [illegible] प्रियतम [illegible]
की [illegible] आत्मा [illegible] और
हम देखते हैं कि वियोग वर्णन के प्रारंभ में [illegible]
[illegible] मथुरा चले जाते हैं तो प्रतीक्षा करते [illegible]
नहीं लौटते पहले गोपियों को दुख करता है
बाद में नंद की भावना को आवर्णित करते हैं
यशोदा नंद के पुरुष भाव को फटकारती है और
कहती है कि जब कृष्ण जा रहा था तो क्यों नहीं
आपने दौड़कर उसके कपड़े को पकड़कर रोका
इसके प्रत्युत्तर में देते हुए नंद कहते हैं ऐसा क्यों
कहती हो, तुम तो नासमझ हो कौन कहता

है कि तुम से कम प्रेम मुझे कृष्ण से है पर मैं
मजबूर था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वात्सल्य
पक्ष के साथ दाम्पत्य प्रेम और विरह का
वर्णन प्रधान रूप से किया गया है।

वियोग के जिस व्यापक चित्रपट पर प्रेमप्रवृत्तियों को उकेरा है वह अपने-आप में [illegible] बेजोड़ और अप्रतिम है। श्रीकृष्ण के मथुरा-प्रवास के अनन्तर ब्रजमंडल के हृदयविदारक परिवेश के सूक्ष्म सूक्ष्म अंकन में सूर ने अपनी प्रतिभा की प्रगल्भता का जैसा परिचय दिया है और काव्य के माध्यम से प्रेम-व्यंजना के उत्कर्ष को जैसा बहुआयामी रूप प्रदान किया है, वह हिन्दी साहित्य में विरल है।

वियोग वर्णन की कुछ ऐसी विशेषताएं हैं सूर में मिलती हैं जो उन्हें अलग करती हैं। उनके वियोग-वर्णन के कतिपय पहलुओं पर विचार करते समय निम्नलिखित विशेषताएँ देखने को मिलती हैं, उनमें प्रेम व्यंजना की विविधता, मानवेतर वस्तुओं का समावेश है व्यंग्यगर्भित उक्तियों की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है। महाकवि सूरदास जी ने वियोग वर्णन के अंतर्गत प्रेम व्यंजना की अनेकरूपता का चित्रण

और उसकी गहराई का निरूपण उसकी गहराई के साथ किया है। इसके वियोग वर्णन गोपियों की मनो... उनके आन्तरिक प्रेम के साथ उनको एक व्यापक रूप पर प्रकाशित कर दिया है, साक्षात्कार का केन्द्र ... है। सूरदास जी को यह पूर्ण विश्वास है कि प्रेम ईश्वर से पूर्ण सहायता मिलती है।

मनःस्थितियों के सूक्ष्म पारखी मनोविज्ञान ... जान पाते हैं कि प्रतिकूल परिस्थितियों को अपना ... ही कल्याण है। सूर ने भावों की अतल गहराई तक जाकर जैसी छानबीन की है वह मात्र कल्पना की निर्मिति नहीं है, मनोवैज्ञानिक सत्य भी है। सूर के वर्णन में शारीरिक नियोजनता पहले नहीं उनमें अनुभूतियों के अनन्त स्रोत फूटते हैं जहाँ पहुँच कर सहृदय का मानस आनन्द मग्न हो जाता है।

वृन्दावन के वातावरण के साथ कृष्ण और राधा मिलन को वियोग की स्थिति के भी मिलन ... प्रेम में आकस्मिक उदय का संकेत मात्र नहीं, बल्कि ...

प्रेम में नाना विकसित होता दिखाया गया है। जिससे उसमें स्वाभाविकता बना हुआ है, इसमें कोई सन्देह नहीं।
संयोग, वियोग और आत्मोत्सर्ग की दृष्टि प्रेम के अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रेमियों के लिए यही सच्ची प्रेम साधना। प्रेम योग है जिस पर जीवनोत्सर्ग किया जाता है। इसमें प्रेम करने वाला सामने वाले के नहीं चाहने पर भी निरंतर उसकी कल्याण कामना करता रहता है। मन ही मनाता रहता है कि उसके पैर में काँटा तक न चुभे।

प्रेम में अपने दोषों की स्वीकृति से मन का कालुष्य धुल जाता है। इसमें आत्म सन्तोष सबसे काबिल होता है। सूरदास जी ने अपने पवित्र प्रेम से सहृदय पाठकों के मन को आह्लादित किया है। राधा विचार करती है कि कभी उसने श्रीकृष्ण से दुर्व्यवहार किया था वही उसके हृदय में चुभती रहती है।

प्रेमोत्कर्ष व्यंजना में कवि ने अन्य कवियों की तरह उहात्मक प्रवृत्तियों द्वारा पाठक के मन के साथ खिलवाड़ नहीं किया है। शायद ही ऐसे पद मिल जाएं जिनके

विरहमूलक रचनाएँ हृदय की सरलता और अनुभूति प्रभविष्णुता से परिपूर्ण है, मानवेतर जगत के प्रति सहृदयता उन्हें उनसे एकात्म बना देता है, वह चाहे वृन्दावन की लताएँ हों, कालिन्दी का किनारा हो, पक्षी का बोलना हो ये सभी उनके विरह से जुड़े हुए।

"मधुबन तुम कत रहत हरे" पद में प्रकृति की अभिव्यक्ति हुई है। उद्दीपन के लिए प्रयुक्त प्रकृति में उनकी अनुभूति की प्रभविष्णुता सराहनीय है। अपनी चित्रविधायिनी कल्पना शक्ति से विरहिन भाव का वर्णन अति सूक्ष्मता से किया है। "पिया बिनु साँपिन कारी रात" पद इसका उदाहरण है। प्रकृति को साथ पशु जगत को विरह से प्रभावित दिखाया गया है इतना ही नहीं जड़ चेतन सब जगह विरह का प्रभाव है। इनके साथ हृदय की रागात्मकता सम्पादित है। एक बात और ध्यातव्य है कि इसमें कुब्जा का सौतिया डाह भी सौतिया डाह से किया गया है।

इस प्रकार हम निर्णयात्मक शब्दों

1 2 3 4 5 6
7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20
21 22 23 24 25 26 27
28 29 30 31
M T W T F S S

14 JUL

7

FRIDAY
JUNE
13

ऐसे कह सकते हैं कि सूरदास का विरह गीत और भ्रमर गीत एक उत्तम उपालम्भ काव्य है।

कुमार रजनीकान्त रंजन
20/12/2024

2014